

अभिवादन : एक शिष्टाचार

—डॉ. भावना आचार्य

सहाचार्य संस्कृत

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था – 'पाश्चात्य मनोविज्ञान ने हमें पशुवृत्तियों का गुलाम बनाकर स्वच्छन्द जीवन जीने, अनैतिक आचरण करने के लिए खुली छूट दे दी, पर अंकुश लगाने एवं जीवन को सही ढंग से जीने का शिक्षण भारतीय संस्कृति से ही मिलता है।'

भारतीय संस्कृति में संस्कार, सदाचार और सद्वृत्तों का अपार महत्त्व है। इस संस्कृति के सभी सिद्धान्त पूर्णतः वैज्ञानिक हैं और सभी सिद्धान्तों का एकमात्र उद्देश्य है— मानव का कल्याण। मानवीय शक्ति और देवत्व-भावना का आधान करने के लिए मनुष्य को सुसंस्कृत किया जाना आवश्यक है। यही कारण है कि भारतीय सनातन संस्कृति में संस्कारों पर बहुत बल दिया गया है।

फूलों में जो स्थान सुगन्ध का है, फलों में जो स्थान मिठास का है, भोजन में जो स्थान स्वाद का है, ठीक वही स्थान जीवन में सम्यक् संस्कार का है। संस्कार शब्द का अर्थ हिन्दी में 'सँवारना' होता है और व्यक्तित्व –निर्माण की प्रक्रिया में सकारात्मक चिन्तन है संस्कार।

मनुष्य अपने विशेष गुणों के कारण अन्य प्राणियों में श्रेष्ठ और महान् समझा और माना जाता है। उसके विशेष गुण हैं – चरित्र बल, विवेकशीलता, अनुशासन आदि। इन सभी के साथ-साथ उसका एक गुण और है – शिष्टाचार। शिष्ट या सम्य आचरण ही 'शिष्टाचार' कहलाता है। शिष्टाचारों की शिक्षा के क्रम में शास्त्रों व स्मृतियों में अभिवादन को विशेष महत्त्व देते हुए उससे होने वाले लाभों की गणना भी की गई है।

प्रणाम-निवेदन या अभिवादन भारतीय सनातन शिष्टाचार का महत्त्वपूर्ण अंग है। अभिवादन का शाब्दिक अर्थ है – किसी के प्रति अभिमुख खड़े होकर परस्पर बोला जाने वाला वचन। अभिवादन प्रणाम है, विनम्रता का द्योतक है, स्वागत-भाव का प्रकाशन है और मनुष्य की सुसंस्कृति का उद्गार है। भारत में सर्वाधिक प्राचीन अभिवादन प्रकार हैं हाथ जोड़कर नमस्कार करना या चरण स्पर्श कर श्रद्धा अभिव्यक्त करना। गीता में नमस्कार करने का उल्लेख है –

मां नमस्कुरु,¹ नमस्यन्तश्च मां भक्त्या,² सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंगाः³।

हमारी भारतीय संस्कृति में प्रणाम, अभिवादन या नमस्कार करने की पद्धति शिष्टाचार के अनुकूल तो है ही, साथ-साथ वैज्ञानिक भी है। यह सर्वमान्य है कि मनुष्य-शरीर में एक प्रकार की विद्युत शक्ति है। दुर्बल को प्रबल विद्युत् अपनी ओर खींचती है। शास्त्रानुसार अपने से बड़े के आने पर उन्हें देखते ही खड़े हो जाना चाहिये, स्वयं आगे बढ़कर उन्हें प्रणाम करना चाहिये। यह वैज्ञानिक सत्य है कि हमारे हाथों-पैरों की अंगुलियों से निरन्तर विद्युत्-किरणें निकलती रहती हैं। मस्तक के भाल प्रदेश और हाथों की अंगुलियों को इस विद्युत् प्रभाव को ग्रहण करने की शक्ति प्राप्त है। अपने से श्रेष्ठ के चरणों पर मस्तक तथा हाथ रखकर हम उनका प्रभाव ग्रहण करते हैं। जैसे एक दीपक से दूसरा दीपक जल जाता है और पहले दीपक में कोई न्यूनता नहीं आती। उसी प्रकार प्रणाम करने पर सब प्राप्त हो जाता है।

अभिवादनशीलता मानव का सर्वोच्च सात्त्विक संस्कार है। शास्त्रों में तो प्रातःकाल उठकर सर्वप्रथम माता-पिता तथा अपने से बड़ों, गुरुजनों को प्रणाम करने को नित्यविधि में अन्तर्हित किया गया है –

उत्थाय मातापितरौ पूर्वमेवाभिवादयेत् ।

आचार्यश्च ततो नित्यमभिवाद्यो विजानता ॥

महाभारत में भी बताया गया है कि अभिवादन से दीर्घ आयु की प्राप्ति होती है –

मातापितरमुत्थाय पूर्वमेवाभिवादयेत् ।

आचार्यमथवाप्यन्यं तथायुर्विदन्ते महत् ॥⁴

इस आदर्श का पालन करते हुए श्रीराम ने अपने तीनों भाइयों के साथ देवतुल्य माता-पिता व आचार्य का अभिवादन किया, ऐसा वर्णन है –

प्रातकाल उटि कै रघुनाथा । मातु पिता गुरु नावाहिं माथा ॥⁵

मनुस्मृति में भी कहा गया है –

अभिवादनशीलस्य नित्यंवृद्धोपसेविनः ।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ॥⁶

अर्थात् अपने से बड़ों की सेवा और उनके प्रति अभिवादनशील मनुष्य की चार बातें सदा बढ़ती हैं – आयु, विद्या, यश और बल। दीर्घायु, विद्वान, यशस्वी, बलवान् बनने के लिए व्यक्ति को विनम्र स्वभाव को अपनाकर अभिवादन-विधि का पालन करना चाहिये। इसलिए इसे वशीकरण मंत्र माना गया है।

प्रणाम की इतनी महिमा है कि ऊँचे-से-ऊँचे महात्मा जिस “वासुदेवः सर्वम्” का अनुभव करते हैं, वह भी सबको प्रणाम करने से सुगमतापूर्वक अनुभव में आ जाता है।⁷ महाभारत में भी बताया गया है कि अभिवादन से दीर्घायु प्राप्त होती है। इसकी एक कथा इस प्रकार है –

भगवान शंकर की कृपा से मृकण्डु मुनि को एक योग्य पुत्र मिला किन्तु वह अल्पायु था। मुनि चिन्तित हुए, फिर बालक को उन्होंने कहा – “तुम जिस किसी ब्राह्मण, मुनि, पूज्य को देखो उन्हें विनम्र होकर प्रणाम अवश्य करना।” बालक ने ऐसा ही किया। सबका आशीर्वाद चिरंजीवी होने का ऐसा मिला कि अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य तथा परशुराम – इन सातों चिरंजीवियों के साथ मृकण्डु के पुत्र मार्कण्डेय आठवें चिरंजीवी हुए।

कालिदास ने इस विधि का महत्त्व बताते हुए कहा है कि निश्चय ही महात्माओं का कोप प्रणाम करने से दूर हो जाता है।

भगवान की स्तुति करते हुए ब्रह्मा कहते हैं—

हृद्वाग्वपुर्भिर्विदधन्नमस्ते जीवेत यो मुक्ति पदे स दायभाक्।⁸

– जो हृदय, वाणी तथा शरीर से आपको नमस्कार करता है, वह आपके परमपद का ठीक वैसे ही अधिकारी हो जाता है, जैसे पिता की सम्पत्ति का पुत्र।

महाराज युधिष्ठिर ने महाभारत के प्रारंभ में रथ, अस्त्र-शस्त्र एवं पदत्राण तक त्यागकर पितामह भीष्म के चरणों में सानुनय प्रणाम किया और “विजय” के आशीर्वाद की कामना की। तब परम प्रसन्न भीष्म ने कहा – “तुम्हारे शील और विनय ने सबको परास्त कर दिया है, तुम्हारी विजय अवश्य होगी।” मूलतः “विजयी भव” का आशीर्वाद प्राप्त होना भी केवल “विनयादभिवादनम्” का ही परिणाम था। श्रीराम ने सर्वत्र इसका अनुपालन किया और “सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे”⁹ आशीर्वाद मिला।

किन्तु आज के भागदौड़ के इस यांत्रिक जीवन में शिष्टाचारों की कमी का अनुभव किया जा सकता है। काम की अधिकता, मानसिक तनाव या फिर आर्थिक लाभ के लालच के पीछे भागने के कारण हो सकता है कि इस भागमभाग में दैनिक शिष्टाचार मनुष्य भूलता जा रहा है। ऐसा नहीं है कि केवल अभिवादन नामक इस वशीकरण मंत्र से ही मनुष्य विद्वान् हो जाएगा या यशस्वी या फिर दीर्घायु को प्राप्त कर लेगा किन्तु हमारी संस्कृति में शिष्टाचार के प्रत्येक पक्ष को सार्थक बताते हुए उसका पालन नियमपूर्वक करने के निर्देश मनुष्य के लिए कुछ इस प्रकार व्यक्त किए गए हैं कि प्राचीनकाल में ये सारे नियम उसकी दिनचर्या में समाहित थे। धीरे-धीरे ये सारे

आचरण अपनी महत्ता खोते जा रहे हैं और यही कारण है कि अपने से बड़ों का सम्मान, उनके प्रति आदर व श्रद्धा लुप्त-सी होती जा रही है।

इन उच्च आदर्शों को यदि शैशवावस्था से ही नियमपूर्वक सिखाया जाय तो हम उन मूल्यों को जीवित रखने के प्रयास में सफल हो सकते हैं और हमारी संस्कृति के इन सभी विशिष्ट गुणों को अक्षुण्ण रख सकते हैं, जिन गुणों के बल पर हमारी भारतीय संस्कृति सभी संस्कृतियों से उत्कृष्ट मानी जाती है।

संदर्भ सूची :

1. गीता 9 / 34, 18 / 65
2. गीता 9 / 14
3. गीता 11 / 36
4. महा. अनु. 104 / 43-44
5. रा.च.मा. 1 / 205 / 7-8
6. मनुस्मृति 2 / 121
7. श्रीमद्भागवत 11 / 29 / 16 - 19
8. श्रीमद्भागवत 10 / 14 / 8
9. रा.च.मा. 1 / 237 / 14

